--- IMG\_7377.txt ---

पहचान  
  
जिन मनुष्यों में दया और शीलता हो, जिनक॑ अन्दर  
प्राणी मात्र के लिये प्रेम हो, जो राग-द्वेष और संकीर्णता  
(तंगदिली) से अलग दिखाई दें, सरल और सादा जिनका  
जीवन हो, बनावट या पालिसी (?०॥०४) जिनको छू न गई  
हो, जो भीतर है वही बाहर हो, शेखी और दिखावे (8॥0फ)  
से जो हमेशा दूर रहें, परनिन्दा और परस्तुति- का जिनका  
स्वभाव न हो, जो दूसरों के दुःख में दुखी और सुख में सुखी  
हो जाते हों, जो नरम और कोमल हृदय रखने वाले हों,  
  
केले कक: पक - "०7 7: ४-  
  
निन्दक और बैरियों के प्रति भी जिनमें दया हो, हानि पहुँचाने...  
  
वाले को भी लाभ देने का जिनको ध्यान रहे, अपना और  
पराया सब महापुरुषों के लक्षण हैं ।  
जिनके स्थान पर पहुँचते ही अशान्त और तप्त हृदय  
को शान्ति मिले, जिनक॑ समीप पहुँचते ही मन के विकार  
नष्ट हो जायें, तथा जिनके अन्दर से हर समय ही आनन्द  
और हर्ष की धारायें निकलती हुई अनुभव हों, उनको 'सन्त'  
कहते हैं । अर्जुन के पूछने पर भगवान्‌ ने कहा-  
उदासीनवदासीनो गुणैय्यों न विचाल्यते ।  
गुणावर्तन्त इत्येव योइवतिष्ठति नेंगते ।।  
प्रकाशं च प्रवृत्ति च मोहमेव च पाण्डव ।  
न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि न निवृत्तानि कांक्षति ।।  
  
अर्थत- जो गुणों को वर्तते हुए भी निश्चल और उदासीन .  
  
रहता है, तथा न निवृत्ति की इच्छा रखता है, और न प्रवृत्ति

--- IMG\_7378.txt ---

से घणा करता है ऐसा मनुष्य व्रिगुणातीत  
हि ह ॥तीत अथवा  
कहा जाता है । वा जीवनमुक्त  
  
आगे हम एक और मोटी  
  
साधारण मनुष्यों के लिये यह कसौटी अच्छी है कप  
है- साध का निरख आँख और माथा, जिसका मत्था चोड़ा  
और चमकता हुआ हो, जिसकी आँखों में दिव्य तेज और  
आकर्षण हो, तथा जिसके चेहरे से मनोहर सरलता झलक  
रही हो, उसको पूर्ण पुरुष समझो । ऐसे महापुरुष अंग-भंग  
कभी उत्पन्न नहीं होते, यह दूसरी बात है कि-सूरदासजी  
की तरह ज्ञान प्राप्त हो जाने पर उनके शरीर का कोई भाग  
नष्ट हो गया हो। सन्‍्त-अन्धा, काना, लूला, लैंगड़ा तथा  
ऐंचाताना कभी नहीं होगा, यह बाहिरी पहिचान है ।  
  
आगे हम वर्तमान युग के एक महान्‌ परमसन्त के  
संक्षेप में कछ चरित्र और उनके थोड़े से अमूल्य उपदेश,  
आपकी भेंट करते हैं | इन महात्मा ने धर्म का लोप होते हुए  
देख, देश, काल और वस्तु पर विचार करते हुए तथा  
आजकल के मनुष्यों की स्थिति, बल और फुरसतों को दिया  
में रखते हुए प्राचीन योग प्रणाली को एक नया सस्काः हि  
है | बिना शारीरिक परिश्रम किये हुए दा बीस को ति  
रोजाना साधन करने से किस प्रकाः आऔत्मिक इत्यादि  
सकती है | और नेती, धोती, आसन और शरणाया कर  
है किये बिना भी जिज्ञासु जल्दी से कैसे तथा गृहस्थी  
है सकता है, जाग्रत में स्वप्न और स्वप्न में जाग्रत,

--- IMG\_7379.txt ---

ही के  
! हे 4 बड़  
| ४ .. आन  
ल्‍ | +ं |  
प |  
  
( चार )  
  
में और विरक्ति में गृहस्थी करने के क्या ढंग होते  
हे न भक्त और ज्ञान की मिलौनी कैसे की जाती है, द  
बिना परिश्रम के सहज में ही महाशक्ति-कुण्डलिनी कैसे  
जागरण होती है, महानाड़ी सुषुम्ना दा में अत्यन्त ना से  
प्राण प्रवेश कैसे किया जात है, तत्वों के रंग और रूप बिना.  
आँख बन्द किये प्रत्यक्ष कैसे दिखाई देते किक वर्णीत्मक, ः  
ध्वन्यात्मक और अनाहत शब्द कानों में बिना हि दूँसे हुए -  
अन्तर में कैसे सुनाई पड़ते हैं, अभ्यासी अपनी सूक्ष्म देही को  
दूर देशों में कैसे ले जा सकता है, सम्मुख बैठे हुए मनुष्यों में  
अपने प्राण-शरीर को कैसे प्रवेश कर सकता है तथा दूसरों  
की आत्मा को पिण्डी स्थानों से उठाकर एकदम ऊंचे ब्रह्माण्डीय  
स्थानों में कैसे पहुँचाया जाता है, अपने और साथ-साथ  
दूसरों के हृदयों पर से मल, विक्षेप और आवरण कैसे हटाये  
जा सकते हैं, अपनी और अन्यों की मनोवृत्तियाँ कैसे पलटी  
जा सकती हैं, मुक्ति प्राप्ति के लिये सजञ्चित संस्कारों को  
जल्दी से किस प्रकार दग्ध किया जाता है, विज्ञानमय कोश  
की सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात समाधियों में साधक को कैसे  
प्रवेश होना होता है, सम्प्रज्ञात समाधि के समय ब्रह्माण्डीय  
ज्ञान और विश्व रूप दर्शन की प्राप्ति का सहज उपाय क्‍या  
है, आनन्दंमय कोश की सहज-समाधि अथवा मानवी  
समाधि में साधक की क्‍या गति होती है इत्यादि अनेक प्रकार.  
के साधनों की ऐसी सरल क्रियायें आपने प्रचलित की हैं कि  
जो अभी तक इस रूप में संसार में नहीं थीं ।

--- IMG\_7380.txt ---

इन सारें साधनों को प्रत्येक में:  
| हुआ तथा अपना रोजगार-थन्धा व बाज कब जा  
ध बडी ! व नौकरी-चाकरी करता  
90 भी बड़ी सरलता से कर सकता है और उसका लाभ  
| “त्यक्ष देख सकता है | इनके करने पर साधक एक सप्ताह  
॥ 7 ही अपने अन्दर कुछ परिवर्तन देखेगा, उसके भाव ऊँचे  
| होने लगेंगे, उसके अनुभव खुलने लगेंगे, अप्रत्यक्ष रूप से  
| आनन्द की धारायें वह अपने भीतर प्रवेश होता हुआ पायेगा  
| और सत््‌-वस्तु की समीपता उसको भासने लगेगी क्‍योंकि  
| ईश्वर सत्‌ू-चिद्‌ आनन्द है । सत्यता, चेतनता (ज्ञान) और  
| आनन्द का पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाना ही 'ब्रह्म-दर्शन' है  
॥ और उसी के तदाकार बन जाना भमुक्ति' है |  
| अब हम अपनी इस भूमिका को अधिक न बढ़ाकर श्री  
॥ गुरुदेव के जीवन-चरिव्र को आरम्भ करते हैं आशा है कि  
प्रेमी जन उसको ध्यान पूर्वक पढ़कर उससे अपने लिये कुछ  
न कुछ शिक्षा लाभ करेंगे |  
3 चतुर्भुज सहाय